International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 3, March 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती पूनम अवस्थी
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. श्रीमती ज्योत्स्ना खरे
प्राचार्य, एन. ई. एस. महाविद्यालय, होशंगाबाद

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 50 छात्र व 50 छात्राओं का चयन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य–ईमानदारी/लगनशीलता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि नैतिक मूल्य–मानवता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में नैतिक मूल्य–मानवता, छात्रों की तुलना में उच्च पाये गये।

शिक्षा का अर्थ ज्ञानार्जन के द्वारा संस्कारों तथा व्यवहारों का निर्माण तथा बालक में मानवीय गुणों का विकास करके उसे इस योग्य बनाना है कि वह मानव समाज व संस्कृति को और अधिक सुंदर व सुदृढ़ बनाने मे अपना बहुमूल्य योगदान दे सके।

अमरकोष मे कहा गया है कि – ''शिक्षा कल्पों व्याकरणं निस्पत्तं ज्योतिंषागति
द्वन्द्वों विर्चित्तिरन्वेष षडडों उच्यते।''

अर्थात् कल्प, व्याकरण, निरूक्त, ज्योतिष, छंद, षंडक आदि का ज्ञान शिक्षा के द्वारा प्राप्त किया जाता है। अर्थात शिक्षा की प्रकिया के द्वारा ही ज्ञान की प्राप्ति होती है।

शिक्षाविद् मानते है कि समाज में बालक के चरित्र का निर्माण एकाकी जीवन व्यतीत करने से नही, वरन दूसरों के संपर्क में आने से होता है। अतः सामाजिक क्रियाकलापों का आयोजन कर बालक को उनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

अतः शिक्षा के माध्यम से हम विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करके मानव समाज अपने मूल्यों को सुरक्षित रख सकता है और आगे बढ सकता है। तभी तो विद्वजन कहते हैं कि मनुष्य अच्छे गुणों का जितना अधिक संगठन करता है उतना ही अधिक वह अपने चरित्र की अभिव्यक्ति करता है। हमारा देश प्राचीन संस्कृति वाला देश है, जिसमें हमेशा ही नैतिकता को प्रधानता दी गयी है, और सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र रहे हैं, किंतु भौतिक जीवन को भी पर्याप्त महत्व दिया गया। मगर विगत वर्षों में हमारे देश में मूल्यों में गिरावट दर्ज की गई है, जिसका प्रभाव शिक्षा जगत पर भी पड़ा है। आज के विद्यार्थी ही राष्ट्र का भविष्य हैं, अतः यदि हमारे विद्यार्थी अपने जीवन में उच्च नैतिक व मानवीय मूल्यों को आत्मसात् करेंगें तो भविष्य में आदर्श व नैतिक मानवीय समाज की कल्पना साकार हो सकेगी।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **हनवत (2007)** ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्र एवं छात्राओं के नैतिक मूल्यों– ईमानदारी/लगनशीलता/ मानवता/विनम्रता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **पोद्दार (2008)** ने अपने अध्ययन में पाया कि अनुसूचित जनजाति एवं गैर अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सैद्धांतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया, अनुसूचित जनजाति की छात्राओं में गैर अनुसूचित जनजाति की छात्राओं की तुलना में उच्च नैतिक मूल्य पाये गये। **बाकलीवाल एवं अग्रवाल (2009)** ने अपने अध्ययन में पाया की व्यवसाय शिक्षा के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **कोष्ठा, लता व अन्य (2009)** ने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि पंजाबी, हिन्दू, मुस्लिम के छात्रों के नैतिक मूल्य – ईमानदारी/मानवीयता पर सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। छात्राओं के नैतिक मूल्य – ईमानदारी पर सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि का प्रभाव नहीं पाया गया जबकि नैतिक मूल्य – मानवता पर सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि का सार्थक प्रभाव पाया गया। **बाजपेयी; श्रीवास्तव एवं पाठक (2013)** के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों–ईमानदारी/मानवता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि नैतिक मूल्य–लगनशीलता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में नैतिक मूल्य–लगनशीलता, छात्रों की तुलना में उच्च पाये गये। **तिवारी (2014)** के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सरस्वती विद्यामंदिर में अध्ययनरत छात्रों में उच्च सामाजिक मूल्य, छात्राओं में अति उच्च सामाजिक मूल्य जबकि विद्यार्थियों में उच्च सामाजिक मूल्य पाये गये।

उपर्युक्त अध्ययनों से शोधकर्ता ने निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में लिंग भेद का अध्ययन आवश्यक है।

उद्देश्य :– माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य–ईमानदारी/लगनशीलता/ मानवता/विनम्रता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य–ईमानदारी/लगनशीलता/ मानवता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श :– न्यादर्श के रूप में कक्षा 9वीं व 10वीं में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें से 50 छात्र एवं 50 छात्राएं हैं।

उपकरण :– उपकरण के रूप में विद्याभारती प्रकाशन, जबलपुर की नैतिक मूल्य मापनी का उपयोग किया गया।

विधि :– सर्वप्रथम होशंगाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गई तथा इस सूची में से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 2 विद्यालयों का चयन किया गया तथा इनसे कक्षा 9वीं व 10वीं में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राओं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर नैतिक मूल्य मापनी का प्रशासन किया गया एवं नैतिक मूल्य मापनी में दिये गये चारों नैतिक मूल्यों का अलग–अलग फलांकन किया गया प्राप्तांकों के आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये एवं तदनुसार सुझाव दिये गये।

परिणामों का विश्लेषण

परिकल्पना – 1 : माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य–ईमानदारी/ लगनशीलता/मानवता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के विभिन्न नैतिक मूल्यों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

नैतिक मूल्य	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
ईमानदारी	छात्र	50	10.70	2.27	1.66	> 0.05
	छात्राएं	50	9.92	2.42		
लगनशीलता	छात्र	50	9.86	2.31	1.91	> 0.05
	छात्राएं	50	10.74	2.33		
मानवता	छात्र	50	10.06	2.21	2.45	< 0.05
	छात्राएं	50	11.14	2.22		
विनम्रता	छात्र	50	10.90	2.23	1.88	> 0.05
	छात्राएं	50	9.98	2.61		

स्वतंत्रता के अंश 98 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य – ईमानदारी के मध्यमान क्रमशः 10.70 व 9.92 प्राप्त हुए जिनमें 0.78 का अंतर है। यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, क्योंकि इनके लिये प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.66 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षा कम है।

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य – लगनशीलता के मध्यमान क्रमशः 9.86 व 10.74 प्राप्त हुए जिनमें 0. 88 का अंतर है। यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, क्योंकि इनके लिये प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1. 91 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षा कम है।

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य – मानवता के मध्यमान क्रमशः 10.06 व 11.14 प्राप्त हुए जिनमें 1.08 का अंतर है। यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है, क्योंकि इनके लिये प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.45 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षा अधिक है।

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य – विनम्रता के मध्यमान क्रमशः 10.90 व 9.98 प्राप्त हुए जिनमें 0.92 का अंतर है। यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, क्योंकि इनके लिये प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.88 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षा कम है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों – ईमानदारी/लगनशीलता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि नैतिक मूल्य – मानवता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में नैतिक मूल्य – मानवता, छात्रों की तुलना में उच्च पाये गये।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई उपपरिकल्पना '' माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य–ईमानदारी/लगनशीलता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है। जबकि उपपरिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्य – मानवता में सार्थक अंतर नहीं है'' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :– माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के नैतिक मूल्यों – ईमानदारी/लगनशीलता/ विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि नैतिक मूल्य – मानवता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में नैतिक मूल्य – मानवता, छात्रों की तुलना में उच्च पाये गये।

शैक्षिक महत्व :– प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्राओं के नैतिक मूल्यों – ईमानदारी/लगनशीलता/विनम्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परंतु नैतिक मूल्य – मानवता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में, छात्रों की तुलना में मानवता का स्तर उच्च पाया गया अतः इस बात की आवश्यकता है कि छात्रों

को भी नैतिक मूल्य – मानवता का पाठ पढ़ाया जाये जिससे की उनमें भी मानवता का स्तर उच्च हो सके, साथ ही शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों को इस प्रकार शामिल किया जाये जिससे की न सिर्फ माध्यमिक स्तर के बल्कि अन्य स्तर के विद्यार्थियों में भी नैतिकता का उच्च स्तर हो सके तभी एक आदर्श भारतीय समाज की कल्पना साकार हो सकेगीं।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

पाण्डेय, रामसकल (2000) **मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य**, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

शर्मा, आर.ए., (1995) **शिक्षा अनुसंधान**, सूर्या पब्लिकेशंस, मेरठ

शर्मा, आर.के. व दुबे, श्रीकृष्ण (2007) **मूल्यों का शिक्षण**, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा

शर्मा, आर.ए., (1995) **मानव मूल्य एवं शिक्षा**,आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

श्रीवास्तव, डी.एन., (नवीन संस्करण) **सांख्यिकी एवं मापन**, विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा

जर्नल्स एवं सर्वे –

बाजपेयी, आशीष; श्रीवास्तव, अर्चना एवं पाठक, स्वाति (2013) ''माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'', *सामाजिक शोध योजना, वॉल्यूम 1, अंक 2, वर्ष 1, जनवरी 2013, पेज नं. 45–50*

बाकलीवाल, ममता एवं अग्रवाल, रंजना (2009) व्यवसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन, *रिसर्च लिंक – 62, वाल्यूम -VIII (3), मई 2009, 121–123*

हनवत, ढाल सिंह (2007) सरस्वती उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य का अध्ययन, *अभिनव शिक्षा, वाल्यूम –1, नं. 1, अप्रैल 2007, 5–7*

कोष्ठा, लता; पटेल, लाजवंती एवं निगम, भूपेन्द्र (2009) विभिन्न सांस्कृतिक प्रष्ठभूमि के विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के नैतिक मूल्य में अंतर का अध्ययन, *रिसर्च हंट, वाल्यूम -IV, इश्यू -II, मार्च–अप्रैल 2009, 181–185*

तिवारी, महेन्द्र कुमार (2014) ''सरस्वती विद्या मंदिर के विद्यार्थियों में पाये जाने वाले सामाजिक मूल्यों का अध्ययन'', *सामाजिक शोध योजना, वॉल्यूम 2, अंक 3, वर्ष 2, जुलाई 2014, पेज नं. 99–101*